दो मिनट का मौन

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

दो मिनट का मौन

(कविता-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

समर प्रकाशन

64-ए, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार

गोपालपुरा बाईपास, जयपुर

दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087

ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2020

ISBN : 978-93-88781-15-2

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक

तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

DO MINUTE KA MAUN (POETRY)

Written by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,
हर उस जीव,
नदिया व शजर को
जिसकी वज़ह से यह क़ायनात
ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ
ममता, करुणा, स्नेह,
वात्सल्य और इन्सानियत
जो किसी भी मज़हब, धन दौलत
लोभ लालच और दीनो ईमान से परे हैं

अनुक्रम

इन्सानियत की कहानी	13
इन्सानियत की तरह	17
रुपया सबसे बड़ा	23
हक़ीक़त	26
वक़्त	29
फिर क्यों ऐसा	35
मानसिकता	37
ज़ेहाद	44
बहू की वज़ह से	47
मज़हब कहाँ है	50
जल ही जीवन	63
कब-तक	68
पवित्रता	72
गमलों में उगी बेटियाँ	75
पिंजरे का पंछी	77
देश का नियोजन	79
कायर इन्सान	86
बुराईयों से ख़ुशहाली	89
किराये का मकान	94

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', सात छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख' प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक़्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्कारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

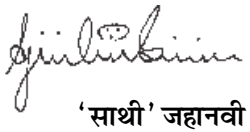

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

इन्सानियत की कहानी

इन्सानियत का
न तो कोई शबाब है
न ही इन्सानियत का
कोई हसीन हुस्न है
फिर भी इन्सानियत के
आग़ोश और बन्धन में
मदहोशी और ख़ुमार है

सुबूत है
तेरी मादकता
भुला देती है
रन्ज़ और ग़म
ख़त्म कर देती है
दंगे और फ़साद
मिटा देती है
इन्सानों में दूरियाँ

तेरी वजह से
अलग अलग मज़हब की
दरियायें और झरने
एक दूसरे से
सौहार्द और

सद्भावना से मिलकर
एक विशाल और
गहरे धर्मों का
समन्दर हो जाता है
जिसमें सभी धर्मों की
इन्सानियत की क़श्तियाँ
वसुदैव कुटुम्बकम् की
भावना और अहसास से
बेखौफ़ तैरती रहती है

तेरी वजह से
अलग अलग मज़हब के
तीज और त्यौहार
आपस में मिल जुलकर
उत्साह और उमंग से
मनाने और मानने से
धर्म आपसी भाई चारे में
प्रेम का प्याला हो जाता है

इन्सानियत न तो
मन्दिर में रहती है
और न ही इन्सानियत
मस्ज़िद में रहती है
और न ही इन्सानियत
बाज़ार में बिकती है
इन्सानियत तो सिर्फ़
इन्सान में ही पैदा होती है
और इन्सान में ही मरती है

इन्सानियत के
समन्दर में समा जाती है
सभी धर्म की दरियायें
काले और गोरे का
भेद नहीं रहता
अमीरी और ग़रीबी की
खाई भी ख़त्म हो जाती है
न ही मुल्क़ों की सरहदें
इन्सानियत को
बाँध पाती हैं

हाँ इन्सानियत को
जेल की सलाख़ों के पीछे
अक़्सर वक़्त बेवक़्त
बेमौत बेरहमी से
लाचार और बेबस होकर
दफ़्न होते हुये
देखा जा सकता है

वैसे इन्सानियत की
कोई सूरत नहीं होती
मगर इन्सानियत
सीरत का ख़ज़ाना होती है
बढ़ती जाती है
उससे भी ज़्यादा
जितना इन्सानियत को
लुटाया और बाँटा जाता है

मुहब्बत, ममता, सद्भावना,
सहयोग, भाईचारा और त्याग
इन्सानियत की शख़्सियत के
अनमोल और बेशुमार खज़ाने हैं
इन्सान की इन्सानियत
उस हर एक के लिए है
जो हर एक सबके लिए हैं

इन्सानियत के गुलशन में
हर धर्म के शजर आज़ाद है
हर धर्म के फल, फूलों और
ख़ुश्बूओं का भी ख़याल है
हर तरफ अम्न और चैन की
महकती हुई बहार है

काँटों का भी आशियाँ है
इन्सानियत के चमन में
मगर सहयोग और प्यार से
इल्म के चराग़ भी रोशन है
जिससे मुसीबत और
बुरे वक़्त के अन्धकार में
इन्सानियत का नूर है

इन्सानियत के बारे में
यह सब ख़यालात
सभी मज़हब के
इन्सानों में मिलते हैं
जो कि फ़रिश्तों के बराबर
ईश्वर तुल्य होते हैं।

इन्सानियत की तरह

ग़ुल में ख़ुश्बू
शजर में फल व छाया
गुलशन में हरियाली
बादल में पानी
समन्दर में दरिया
दरिया में रवानी
फ़लक़ में सितारे
दिन में उजाला
सूरज में रोशनी
चाँद में चाँदनी
अग्नि में ऊष्मा
हमारी कोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे
इन सब की
फ़ितरत की तरह

लेखक में लेखनी
गायक में गायन
नृतक में नृत्य
चित्रकार में चित्रकारी
संगीतकार में संगीत

कलाकार में कला
व्यापार में दौलत
रोजगार में तरक्की
क़ानून में इन्साफ़
हमारी क़ोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे
इन सब की
फ़ितरत की तरह

सैनिक में शहादत
भगत का जोशो जुनून
सुभाष की देशभक्ति
गाँधी की अंहिसा
पटेल की निष्ठा
शेखर की आजादी
तिलक का स्वाभीमान
चाणक्य का अर्थशास्त्र
राजनीति में नीति
हमारी कोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे
इन सब की
फ़ितरत की तरह

महाभारत का संग्राम
अर्जुन का निशाना
कर्ण का दान

भीम का बल
युधिष्ठिर का धर्म
विदुर की नीति
गांधारी की निष्ठा
कुन्ती की मर्यादा
द्रोपदी का प्रतिशोध
अभिमन्यु की वीरता
कृष्ण की लीला
गीता का ज्ञान
भीष्म की प्रतिज्ञा
हमारी क़ोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे
इन सबकी
फ़ितरत की तरह

राम की मर्यादा
सीता का सतीत्व
लक्ष्मण का साथ
भरत का भ्राता प्रेम
लव-कुश का साहस
केवट की चतुराई
सुग्रीव का सहयोग
हनुमान की स्वामी भक्ति
अंगद का स्वाभीमान
हमारी क़ोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे

इन सब की
फ़ितरत की तरह

दिमाग़ में ख़याल
दिल में घड़कन
दवाई में इलाज
मज़दूर में पसीना
फ़कीर की इबादत
रगों में ख़ून की रवानी
प्रताप का स्वाभिमान
पन्नाधाय का बलिदान
पद्मनी का जौहर
मीरा में भक्ति
लक्ष्मीबाई की बहादुरी
एक लव्य की गुरू दक्षिणा,
एकाग्रता, लगन और मेहनत
हमारी कोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे
इन सब की
फ़ितरत की तरह

गुरू में ज्ञान
शिष्य में लगन
शिव की साधना
पार्वती का पति धर्म
प्रहलाद की भक्ति
दुर्गा की शक्ति

कुबेर का खजाना
गणेश की बुद्धी
ब्रह्मा का सृष्ठि निर्माण
लक्ष्मी का शुभ-लाभ
विष्णु का धन और धान्य
हमारी क़ोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे
इन सब की
फ़ितरत की तरह

सोने में चमक
हीरे में प्रकाश
मुसीबत में दोस्त
बेताबी में मिलन
मिलन का इन्तज़ार
आँखों में अश्क़
फ़क़ीर में इबादत
पानी में मछली
शराब में सुरूर
हमारी क़ोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे
इन सबकी
फ़ितरत की तरह

माँ की ममता
पिता की जिम्मेदारी

पति पत्नी में ऐतबार
देवर भाभी में हँसी मज़ाक़
जीजा साली के रिश्तों में
चाहत और क़शिश
भाई बहन में आपसी प्यार
औरत में लाज व शर्म
बच्चों में मासूमियत
बुज़ुर्गों के आशीर्वाद
हमारी क़ोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे
इन सब की
फ़ितरत की तरह

तीज और त्यौहारों में
उत्साह और उमंग
सावन का सोमवार
करवाचौथ में विश्वास
होली के रंग और गुलाल
दीपावली की जगमग रोशनी
हमारी क़ोशिश हो कि
इन्सान में
इन्सानियत रहे
इन सबकी
फ़ितरत की तरह।

रुपया सबसे बड़ा

जी हाँ मैं रुपया हूँ
हाँ-हाँ वही रुपया
जो हर दिल अज़ीज़
सबका प्यारा-दुलारा है

रुपयों के लिये इन्सान
अपने मन और तन
दिल और दिमाग़ को
ख़ुदग़र्ज़ होकर
जिस तरह बेचता है
मैं शर्मसार हो जाता हूँ

इन्सान अपने ज़िगर के टुकड़े को
औरत अपनी आबरू को
माँ अपनी ममता को
दोस्त अपनी दोस्ती को
महबूब अपने प्यार को
किसान खड़ी फसल को
व्यापारी अपने रोजगार को
बच्चा अपने बचपन को
मज़दूर अपनी मेहनत को
भाई खून के रिश्ते को

सैनिक अपनी बहादुरी को
जब लाचार और बेबस
होकर बेचता है तो
मैं भी ख़ुद को
गुनहगार मानता हूँ

रुपया किसी को भी
ख़रीद सकता है
जैसे, इन्सान की इन्सानियत
शरीफ़ की शराफ़त
औरत की अस्मत
गुण्डे की गुण्डागर्दी
ईमानदार की ईमानदारी
बदमाश की बदमाशी
अक़्लमंद की अक़्लमंदी
पण्डित की पण्डिताई
लेखक की लेखनी
नेता की नेतागीरी
अदालत का इन्साफ़
देशभक्त की देशभक्ति
कलाकार की कलाकारी
रिश्ते नातों की
ख़ुदग़र्ज़ रिश्तेदारी
फ़कीर की इबादत में
ख़ुदा की अक़ीदत
यहाँ तक कि रुपया
प्यार भी खरीद सकता है
मेरी ताक़त का अन्दाज़ा

इसी बात से
लगाया जा सकता है

मेरा वजूद एक से लेकर
दो हज़ार तक है
मैं वह केन्द्र बिन्दु हूँ
जिसके चारों ओर
सारी कायनात चक्कर लगाती है
मैं भी यही चाहता हूँ कि
मैं भी सर्व शक्तिमान व
ताक़तवर बनूँ

मगर साथ ही मैं
हाथों का मैल
और पसीना भी हूँ
अत: मैं
यह नहीं चाहता की
मुझे तिजौरी में बन्द कर
सड़ा गलाकर
बदबू फैलाई जाये

मैं तो केवल
इतना चाहता हूँ कि
मैं बेसहारों का सहारा बनूँ
भूखे की भूख मिटाऊँ
प्यासे की प्यास बुझाऊँ
तन ढकने के लिए कपड़ा
और रहने के लिए मकान बनूँ।

हक़ीक़त

ज़िन्दगी जुड़ी है ज़मीन से
सपने जुड़े हैं आसमान से
दोनों के टूटने का अन्तर है
ज़मीन और आसमान का
गोया कोई गिरा हो
ज़मीन से ज़मीन पर
और कोई गिरा हो
आसमान से ज़मीन पर

सपने सच होते तो
दिन में रात होती
रातों में रोज़ाना
आफ़ताब का नूर होता
जैसे ग़रीबों की
ज़माने में कोई भी
अहमियत नहीं होती
वैसे ही अनजाने, बेख़बर,
बदहाल अदने से
सितारों की झिलमिल से
ज़मीन कहाँ तक रोशन होती

आम आदमी की ज़िन्दगी
ऐसी हक़ीक़त होती है

जिसमें काले कारनामों के
रोज़गार और कारोबार से
मेहनती और ईमानदार व्यापारी
बदहाली में ज़िन्दा रहते हैं

रहबरों से
रहजनी होती है
इन्सानियत
अभावों में जीती है
चराग़ तले
अंधेरा होता है
कोठों पर
ममता दम तोड़ती है
दहेज की चिता पर
बेबस बेटियाँ जलती हैं
मासूम बच्चों को
बेबसी में बेचना पड़ता है

आम आदमी की ज़िन्दगी
ऐसी हक़ीक़त होती है
बदहाली में फुटपाथ पर
गुज़र-बसर होती है
खौफ़नाक चीखों से
मन्दिर मस्जिद गूँजते हैं
खास अपने ही
अस्मत के लुटेरे होते हैं
वफ़ादार कुत्ते की
मौत की तरह मरते हैं

आस्तीन में साँप पलते हैं
सफेद हाथी आबाद होते हैं
बेगुनाह गुनाहगार होते हैं

रिश्वत से नाज़ायज़ भी
क़ानूनन ज़ायज़ होता है
फ़र्ज़ी ग़वाहों से
इन्साफ़ दम तोड़ता है
नकली दवाओं से
इलाज बीमार होता है

हमारी ज़िन्दगी
रोटी से चलती है
ख़याली पुलावों से नहीं
जंगल राज में
शेर की चलती है
गीदड़ की फ़रियाद नहीं
चराग़ महलों में
रोशन होते हैं
ज़र्जर झौपड़ियों में नहीं
अब्र समन्दर में बरसते है
उपजाऊ ज़मीन पर नहीं।

---

1. गोया=जैसे **2.** आफ़ताब=सूरज **3.** नूर=प्रकाश **4.** अब्र=बादल

वक़्त

वक़्त को गुज़ारना
ख़ुद को मिटाना है
और वक़्त से गुज़रना
अपने आपको बनाना है
वक़्त से सबक मिलता है
जो गुज़र गया
वक़्त सावधान करता है
जो आने वाला है
वक़्त बेहद ताकतवर है
जो अभी वर्तमान में है

वक़्त ने
वक़्त वक़्त पर
लतीफ़ों पर दाद से
महफ़िल में
हौसला अफ़ज़ाई
और ग़ज़ल पर
हँसी देखी है,

वक़्त ने
वक़्त वक़्त पर
खोटे सिक्के की

खनक व चमक को
चलन में देखा है,
अस्मत को सड़कों पर
शराफ़त को
कोठे पर देखा है,
मासूम बच्चों को
सीने से लगाये हुए
मज़बूर माँ को
सिन्दूर पोंछते देखा है

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर
शौहर के साये तले
पत्नी को बिकते देखा है,
दहेज के गुलशन में
कलियों को
मुरझाते देखा है,
पूनम की रात में
चाँद उदास और
दिन में चन्द्र को
ग्रहण लगते देखा है,

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर
बेटे-बहू के साये में
माँ-बाप को
भीख पर पलते देखा है,
गुलों के कारनामों से

बेबस बाग़वाँ को
फ़रियाद करते देखा है

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर
अक़्सर तैराक को
पानी की मौत देखा है,
दौलत के लिये
भाई-भाई को
जान का दुश्मन देखा है,
रहबर को मंज़िल का
पता पूछते देखा है,
बन्द कमरे में
चराग़े दिल रोशन
सोने चाँदी की
दीवार को टूटते देखा है

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर
रहजनी मन्दिरों
और मस्ज़िदों में
बलात्कार ख़ुदा के
दर पर देखा है,
तानों का ताज़
वाइज़ के सर पे
पण्डित और मौलवियों को
महलों में देखा है,

वक़्त ने राजा को
रंक बनते देखा है,
सियासत को
कोठों के इशारे पे
बाप और भाई को
जेल में देखा है

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर
शराफ़त और
इन्सानियत को
बदहाली में
जीते देखा है,
नाज़ायज़ को
मौज़ मस्ती में
ज़ायज़ को
सघर्ष करते देखा है,
दो वक़्त की
रोटी के लिये
ज़िगर के टुकड़े को
बिकते देखा है,

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर
महाभारत में
अपनों से अपनों को
छल कपट से
मरते देखा है,

सीता का हरण
और वनवास
द्रोपदी को भरी सभा में
बेआबरू होते देखा है

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर
भूखे बच्चों के लिये
बेबस माँ के बदन को
बिकते हुए देखा है,
बूढ़े सम्पन्न
माँ–बाप को
धनवान बेटों के
होते हुए हुये
बदहाली से
वृद्धा आश्रम में देखा है,

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर
बेगुनाह को सज़ा
और इन्साफ़ को
बिकते हुये देखा है,
दूध पीते को
ज़हर उगलते हुये
आस्तीन में
साँपों को देखा है

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर

ख़ुदग़र्ज़ी और कायरता में
विश्व गुरु भारत की
एक हज़ार साल की
बेबस और बदहाल गुलामी,
वतन के बँटवारें में
बीस लाख लोगों का
बेरहमी से मरना,
जलियाँवाले बाग में
हजारों निहत्थों को
गोलियों से भूनना,
मासूम और नौजवानों को
देश की आज़ादी के लिये
कुर्बान होते हुये देखा है,

वक़्त ने,
वक़्त वक़्त पर
चन्द्र शेखर आज़ाद को
हमेशा ज़िन्दा आज़ाद देखा है
झाँसी की रानी की वीरता
पन्नाधाय की स्वामी भक्ति
महाराणा प्रताप का
मान और स्वाभीमान,
घायल स्वामिभक्त चेतक का
नाला पार करना
मीरा को ज़हर का
प्याला पीते देखा है।

---

1. फ़रियाद = पुकार **2.** रहबर = मार्गदर्शक **3.** रहजनी = लूटपाट **4.** वाईज़ = धर्मगुरू

फिर क्यों ऐसा

भूख मिटाते हैं
यह हत्यारे
किसी की चिता पर
रोटियाँ सेंक कर
चैन मिलता है
इन हत्यारों को
जब किसी मरने वाले के
बच्चों तथा पत्नी को
रोता व बिलखता देखते हैं

सुक़ून मिलता है
इन हत्यारों को
जब किसी मरने वाले को
ज़िन्दगी पाने के लिए
मौत से जूझते हुये देखते हैं

जब हत्या के बदले
हत्या ही होगी
तो यह हत्यारे भी
ज़िन्दगी पाने के लिए
मौत से लड़ेंगे
इनके भी तो बच्चे

और पत्नियाँ रोयेंगी
तो फिर क्या बुरी है
अहिंसा, प्यार और इंसानियत
फिर क्यों?
हिंसा को अपनाते हो
और एक दूसरे पर पछताते हो।

मानसिकता

नापाक़ इरादों से
जो जन्म न ले सकी
क्या वो बेटी नहीं थी
क्या वही बेटी है
जो मन्नतों के बाद जन्मी है

क्या मेरी बेटी ही बेटी है
मेरी बहू भी तो
किसी की बेटी है
क्या मेरी बहू
मेरी बेटी नहीं हो सकती
क्या मेरी बेटी
मेरे समधी की
बेटी नहीं हो सकती

माँ बेटी बरसों तक
ख़ुशी से साथ रहती हैं
सास को बहू और बहू को सास
एक पल नहीं सुहाती
जबकि दोनों अभी भी
माँ बेटी के रूप में
पीहर में ख़ुश रहती हैं

दो बहनें
अपनेपन से रहती हैं
जबकि देवरानी व जेठानी
अनमन से रहती हैं
ननद भी जब बहू बनेगी
तब उसको अहसास होगा
बहू होने का
दर्द क्या होता है
कितना मुश्क़िल होता है
अनजान लोगों को
अपना परिवार मानना
जबकि उसके मन में सास है
और सास के मन में बहू है

जब बेटी
होश सम्भालती है
अपनी माँ को
सास के रूप में
देखकर हैरान होती है
क्या यह वही
माँ की ममता है
जो मेरे लिये रहती थी

जब बेटी
बहू बन जाती है
तब सास के
जुल्म सहती है
जब बहू

सास बन जाती है
तब उसके जख़्म
हरे हो जाते हैं
उसे सास के
ऐशो आराम नज़र आते हैं
फिर वो भी
सही मायने में
सदियों पुरानी
सास बन जाती है

यह सोच
क्यों बदल जाती है
जबकि सास भी
कभी बहू थी
और बहू भी
कभी बेटी थी
सास के मन में
बेटी होती
तो बदन बहू का
जलता कैसे
ज़हर से बदन
नीला पड़ता कैसे
फाँसी के फन्दे पर
बदन झुलता कैसे
क्या इससे यह
साबित नहीं होता कि
औरत ही
औरत की दुश्मन है

क्या मेरी
बहन बेटियाँ ही
मेरी बहन बेटियाँ है
तभी तो
मेरे हाथ नहीं काँपते
दूसरे की बेटियों से
छेड़खानी करते वक़्त
मेरा कलेजा
नहीं फट जाता
दूसरे की बेटियों से
जबरदस्ती करते वक़्त
मेरी हैवान आँखें
शर्म से नहीं झुकती
दूसरे की बेटियों का
अश्लील नृत्य देखते वक़्त
क्योंकि दूसरे की बहन बेटियाँ
मेरी बहन बेटियाँ नहीं हैं
असल में
यह दोहरी मानसिकता ही
दुश्मन है बहन बेटियों की

बहन बेटियाँ
किसी वज़ह से
क़ामयाब न हो सकी
जिसने लाचारी में
ख़ुदकुशी करली
जो मज़बूरी में
बदचलन हो गई

मुझे इनकी बदनामी से
कोई भी
फ़र्क नहीं पड़ता
क्योंकि यह
मेरी बहन बेटियाँ नहीं हैं

मगर समाज तो
बदनाम होता ही है
क्या मैं समाज नहीं हूँ
क्या समाज
मेरा अपना नहीं है
नहीं,सिर्फ़ मेरा घर ही
मेरा अपना परिवार है
मेरी ज़िम्मेदारी
सिर्फ़ मेरे मकान तक है
यहाँ तक कि
मेरी ज़िम्मेदारी
उन घरों की भी नहीं हैं
जिन परिवारों में
मेरा रोज आना जाना हैं
और उनसे मेरा
करीबी रिश्ता है
भले ही उन घरों की
बदनामी की आँच से
मेरा घर भी जल सकता है

कितना मुश्क़िल है
बेटियों का बाप होना

जैसे अंगारों पर
नंगे पाँव चलना
क़दम-क़दम पर
अस्मत के लुटेरे
खूंखार दरिन्दों का होना

बेटियों की
नादान ग़लतियों की
सज़ा भुगतनी पड़ती है
वक़्त बेवक़्त
ज़हर के घूँट
पीने पड़ते हैं
बदनामी की चादर
ओढ़कर जीना पड़ता है
जलालत की
इस ज़िन्दगी से
मरना अच्छा लगता है

दहेज की चिता पर
अपनी हैसियत से
सबको जलना पड़ता है
चाहे कोई कितना ही
अमीर क्यों न हो
लालच का
ज़हरीला नाग
सबको डसता है
वो बिरले ही होते हैं
जो इस विष के

प्रभाव में नहीं आते
और दहेज के
ज़हरीले दाँतों को
विषहीन कर
दहेज लेने से
मना कर देते हैं।

ज़ेहाद

शहर की माताएँ
मज़बूर होकर मसरूफ़ हैं
मासूम बच्चों को
बेवक़्त दफ़नाने में
बेबस विधवा औरतें
सिन्दूर पौंछ रही हैं
जैसे ग़मगीन होकर
होली खेल रहीं हो
बहुत सारी बहनों की
कलाईयाँ सूनी हो गईं
रक्षा–बन्धन के
पवित्र बन्धन से

आदमी ज़ख्मी शवों को
लाचारी से जलाने के लिए
हरे भरे दरख़्तों को
बेरहमी से काट रहे हैं
लहूलुहान जज़र्र लाशें
चारों तरफ बिखरी पड़ी हैं
और उन पर गिद्द मण्डरा रहे हैं
खण्डहर मकानों से
घायल चीख रहे हैं

कोई लहूलूहान प्यासा
पानी मांग रहा है
कोई ज़ख्मी दर्द से
कराह रहा है
तो कोई ख़ून से
लहूलुहान पड़ा हुआ है
मौत के मातम जैसे
ख़ामोश सन्नाटे में

माँ और दादी
बेज़ुबान हो गये हैं
लावारिश बच्चों के
मासूम सवालों से कि
उनके पिता अब तक
घर क्यूँ नहीं आये
खौफ़ज़दा परिवारजन
हैरान व परेशान हैं कि
मासूम बच्चों को क्या ज़वाब दे

खेत और खलिहान
सूखे और खाली पड़े हैं
हल और बैल उदास खड़े हैं
उपजाऊ ज़मीनें अरसे से
बन्जर पड़ी हैं
सिर्फ़ नफ़रतों की
ख़ूनी फ़सलें आबाद हैं
जिसमें सिर्फ़ और सिर्फ़
बारूदी अनाज पैदा होता है

बचे हुये मजदूर
बिना काम बेबस खड़े हैं
जवान विधवा औरतें
भूखी और प्यासी हैं
बेबस विधुर पति
चूल्हा जला रहे हैं
ताकि अपंग बच्चों को
कुछ खिला सके

क्या ख़ून की नदियाँ बहाना ही
मज़हब के लिये ज़ेहाद है

क्या ख़ून की नदियाँ बहाना ही
मज़हब के लिये ज़ेहाद है।

बहू की वज़ह से

पहले बहू के लिए
सास और ससुर
खिलौने लेकर आते थे
अब उम्र दराज़ बहू
सास ससुर के लिये
खिलौने लेकर आती है

पहले ससुराल
एक कुआँ था
अब ससुराल
एक खाई है
पहले खेलता कूदता
मासूम बचपन था
अब गुज़रती हुई
बेवक़्त की जवानी हैं
बिना यौवन के
दाम्पत्य जीवन में
फिर कैसे और क्यों
मधुर रिश्तों की रवानी हैं

नि:सन्देह कुआँ
खाई से बेहतर है

अपनी गुज़र बसर में
परिवार के रिश्तों का
दायरा सीमित है
कुएँ की मज़बूत दीवारों में
अपनेपन के रिश्तों में
रस्मो रिवाज़ों का क़ायदा है
मिल जुल कर रहने में
सारे परिवार का फ़ायदा है

मुसीबत के बुरे वक़्त में
वट वृक्ष की घनी छाया है
हारी बीमारी के वक़्त में
तीमारदारी के लिये
अपनेपन का साया है
मधुर रिश्तों में
भाईचारे का सरमाया है
गहरी लम्बी खाई में
कौन कौन
कहाँ-कहाँ रहता है
कौन किसके यहाँ
आता और जाता है
सबके सब
अपने मतलब की
ख़ुदग़र्ज़ दुनिया में
व्यस्त और मौका परस्त होकर
मतलब परस्त रहते हैं
जिन्हें वक़्त ज़रूरत में
तलाशना मुश्क़िल होता है

दु:ख-सुख के वक़्त में
एक दूसरे से
बेख़बर रहते हैं
मासूम बच्चे रिश्तों से
अन्जान रहकर
उदास रहते हैं
खेलने कूदने की उम्र में
बन्द कमरे के मकान में
बेजान होकर रहते हैं

तन्हाई के समन्दर में
जुदाई की क़श्ती में
अकेले सवार रहते हैं
जब परिवार में आता है
मुसीबतों का तूफ़ान
अपनेपन की
पतवार के बिना
रिश्तों के साहिल पर
लाचारी और बेबसी से
मुसीबतों में मझधार रहते हैं।

मज़हब कहाँ है

कोई सी भी
लकड़ी को
मन माफ़िक
आकार दे दो
शजर की तो
कोई पहचान नहीं
या फिर शजर को तो
ख़ुद जलकर
सबको उष्मा देना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

कोई सी भी
गीली मिट्टी को
अपना मनचाहा
साकार कर दो
मिट्टी की तो
कोई जात नहीं
मिट्टी को तो
एक न एक दिन
सबकी सारी ज़रूरते
पूरी और ख़त्म करके

मिट्टी में मिल जाना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

किसी भी मासूम बच्चे के
बचपन को कोई भी
मनचाहा नाम दे दो
वो अमीरी और ग़रीबी
जात और पाँत को
कहाँ समझता है
उसको तो सबके साथ
बिना किसी भेदभाव के
हिल मिलकर खेलना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

ख़ून किसी भी
इन्सान का ले लो
उसका रंग तो
लाल ही होना है
उसका काम तो
सबकी रग रग व
नसों में दौड़कर
जीवन को
गतिमान बनाना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

किसी भी माँ का
स्नेह का आँचल
देख लो
प्यार और ममता ही पाना है
उसे हर भूखे प्यासे बच्चे को
अमृत जैसा दूध पिलाना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

सैनिक किसी भी
वतन का ले लो
उसे तो हर हाल में
वतन परस्त होना है
जान पर खेलकर
वतन महफ़ूज़ करना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

दिल की दुआयें
किसी की भी सुन लो
दुआयें पूरी करेगा
सिर्फ़ एक ऊपरवाला
हम सबके हाथों को तो
सिर्फ़ आसमान की तरफ
ही तो उठना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

रंज और ग़म
किसी के भी ले लो
दु:ख और दर्द से तो
सभी को तड़पना है
हमदर्दी से ही आराम
हम सभी को मिलना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

रोटी किसी भी
घर की ले लो
सूरत और सीरत
एक जैसी ही होती है
उसे तो हम सबकी
भूख को मिटाना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

अश्क किसी के भी ले लो
उनको आँखों से ही बहना है
और मन का बोझ
निर्मल और हल्का करना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

नदिया किसी भी
मुल्क़ की ले लो
जल ही सबका जीवन है

बिना पानी के तो
फिर कैसे जीना है
दरिया की रवानी को तो
सब जगह पर
एक जैसा बहना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

दिन रात की रोशनी
कहीं से भी ले लो
चाँद और सूरज तो
सबके लिये एक ही हैं
सारी कायनात को तो
उन्हें ही रोशन करना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

चेहरा किसी भी
शख़्स का ले लो
नाक, कान और आँखें
सबके एक जैसा होना है
और उन सबको
एक जैसा काम करना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

औरत कोई सी भी
देख और पंसद कर लो

सब के तन और मन में
ख़ूबसूरती बेमिसाल है
शर्म और हया ही
सभी औरतों का गहना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

मज़दूर कोई सा भी देख लो
ख़ून पसीना सबको बहाना है
मेहनत से ही मजदूर को
गुज़र बसर करना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

हँसी किसी भी
शख़्स की ले लो
हम सबको तो
एक जैसा ही हँसकर
ग़मगीन माहौल को
ख़ुशनुमा बनाना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

पानी किसी भी
मटके का ले लो
पानी का कोई भी तो
रंग नहीं होता
उसको तो सबकी

प्यास बुझाना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

अस्मत किसी भी
औरत की ले लो
सबको एक जैसी
ज़लालत होनी है
बेआबरू तो
बहन बेटी को होना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

रिश्ते किसी भी
शख़्स के ले लो
उनको चाहे जो भी
नाम और पहचान दे दो
रिश्ते के अनुसार
अहसास और जज़्बात
सबको एक जैसे ही होना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

हत्या किसी भी
इन्सान की ले लो
रूह को किसने पहचाना है
सबके बदन को तो
हर हालात में

ज़ख्मी होकर तड़पना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

ख़ुदकुशी किसी भी
इन्सान की ले लो
सबकी वज़ह तो
एक जैसी ही होनी है
सबकी रूह को
एक जैसे ही
तड़प तड़प कर मरना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

चोरी और बेईमानी
किसी की भी ले लो
सबके गुनाहों का
फ़लसफ़ा एक होना है
सबको अपने कर्मों का
फल ज़रूर भुगतना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

हवा किसी भी
शजर की ले लो
बादल किसी भी
आकाश के ले लो
घटायें किसी भी

आसमान की ले लो
इनको तो हर जगह
बहना और बरसना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

बसावट किसी भी
शहर की ले लो
हरियाली किसी भी
जंगल की ले लो
गुलशन किसी भी
जगह के ले लो
इन सबको तो
क़ायनात और क़ुदरत में
एक जैसा ही
सुन्दर दिखना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

भूख और प्यास
किसी की भी ले लो
सब इन्सानों को तो
एक जैसा बेहाल होना है
सबके पापी पेट का सवाल
एक ही तो होना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

प्यार और मुहब्बत
किसी की भी ले लो
सभी इन्सानों में
एक जैसी दीवानगी,
चाहत और क़शिश होती है
प्यार और मुहब्बत से ही तो
हम सबको अमर होना है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

तारे और सितारे,
ग्रह और नक्षत्र,
चाँद और सूरज
एक ही आसमान में रहते हैं
हम सबके लिये
एक समान काम करते हैं
चाहे इनके काई भी नाम हो
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

अच्छे और बुरे
कर्मों के हिसाब से
स्वर्ग और नर्क की
मान्यता और अवधारणा है
जो सारे मज़हब में
एक समान विद्यमान है
फिर हमारा मज़हब
अलग-अलग कहाँ है

बहुत कुछ
बहुत सारे हैं
कायनात में
मगर सबका उपयोग
सब इन्सानों के लिये
एक समान और
एक जैसा ही है,
नील गगन भी तो
सिर्फ़ एक ही है
और हम सबका
पालनहार ईश्वर
आसमान में ही रहता है
जो एक ही है
भले ही ईश्वर को
कोई भी नाम दे दो
जब आकाश का
बँटवारा मुमक़िन नहीं
तो फिर हमारे मज़हब
अलग अलग क्यों है

संसार में और भी
बहुत कुछ ले लो
फिर कहाँ और कैसे
छोटा-बड़ा इन्सान है
फिर कैसे ऊँची नीची
जाति का इन्सान है
ख़ुदा की नज़र में तो
हम सब एक समान है

फिर क्यों इन्सान
अलग-अलग रहते हैं
सबका खाना और पीना,
जीना और मरना
सोना और जागना
एक जैसा ही है
तो फिर हमारे मज़हब
अलग-अलग क्यों हैं

हमारे मज़हब
अलग-अलग ही सही
हर मज़हब का
अपना अपना फ़लसफ़ा है
इन्सानियत और भाईचारा,
प्यार और मुहब्बत
हर मज़हब में एक समान है
जिसको जो पसंद हो
वो वैसा ही इक़रार करे
किसी के मज़हब से
खिलवाड़ न करे
जो भी करे
प्यार से समझाकर करे
ताक़त, लोभ लालच
और धन दौलत से
किसी के भी
दीन और ईमान से
जबरदस्ती और
छेड़खानी न करे

नफ़रतों से
ख़ूनी रंजिशें न पालें
सब हिल-मिलकर
और ख़ुशहाल रहें
एक दूसरे के
मज़हब का सम्मान करें
वतन मे अम्न व चैन का
हम सब मिलकर पैग़ाम करें
जय हिन्द जय हिन्द जय हिन्द।

जल ही जीवन

हुजूर, माई–बाप
आप पानी हो
जिसकी अहमियत
ख़ुदा से कम नहीं है,
एक मुद्दत से
आपके बगैर यह चमन
सहराओं सा लगता है
बहारों की जगह
पतझड़ छाया रहता है
कलियों पर ग़मगीन
उदासी छायी रहती है

हुजूर, माई–बाप
आप पानी हो
जिसकी अहमियत
ख़ुदा से कम नहीं है,
नदी तो अपनी
फ़ितरत से बहना चाहती है
मगर लाचार व मज़बूर है
वो बह नहीं सकती
क्योंकि उसमें रवानी नहीं
क्योंकि उसमें

आपका प्रवाह नहीं है
बल्कि उसकी जगह
शहर की गन्दगी है
जिसने नदी की रूह को
ज़िन्दा ही दफ़्न कर दिया है
रूह चीख–चीख कर कहती है
मुझे अपनी फ़ितरत से बहने दो
मगर लाचारी व बेबसी में
ऐसा कर नहीं पाती

हुजूर, माई–बाप
आप पानी हो
जिसकी अहमियत
ख़ुदा से कम नहीं है,
सब से बढ़कर दुखी तो
बेचारा असहाय किसान है
उसकी आँखें पथरा गईं
आपसे मिलने के इन्तज़ार में
आँखों में आँसू नहीं बचे
करुणा दिखाने के लिए
ज़मीनें बन्जर हो गयी है
जिसमें कभी सोने जैसी
फ़सल उपजा करती थी

हुजूर, माई–बाप
आप पानी हो
जिसकी अहमियत
ख़ुदा से कम नहीं है,

बैसाखी का त्यौहार
ग़रीब मज़दूर व किसानों को
मौत के मातम जैसा लगता है
क्योंकि जिस मस्ती व ख़ुशी से
यह त्यौहार मनाया जाता है
वह आपके बगैर नामुमक़िन है
किसान आपके बगैर बेसहारा है
आप उसके पालनहार हो,
आप से गुज़ारिश है कि
किसान के पैरों पर
कुल्हाड़ी मत मारा करो

हुजूर, माई-बाप
आप पानी हो
जिसकी अहमियत
ख़ुदा से कम नहीं है,
अब किसान इस खेती से
घबराने-भागने लगा है
जिसमें हमेशा ख़ुशहाली
महका करती थी
अब उसकी इच्छा होती है कि
मौत को गले से लगा लूँ
मगर किसान मज़बूरीवश
ऐसा कर नहीं पाता
क्योंकि उसके पीछे
भरा पूरा परिवार है
छोटे-छोटे बच्चे हैं
अधेड़ उम्र के माँ-बाप हैं

अब आप ही सोचो मालिक
क्या आपके बगैर
ज़िन्दगी मुमक़िन है

तुम बहुत ठीक कहते हो कि
मेरे बिना तो
ज़िन्दगी मुमक़िन नहीं
मगर तुम ही बताओ
क्या तुम उस जगह
जाना पसन्द करोगे
जहाँ तुम्हारा स्वागत न हो
जहाँ तुम्हारा इन्तज़ार न हो
जिन्हें मेरा बेसब्री से
इन्तज़ार रहा करता था
वो तो अब
गाँव की मिट्टी को छोड़कर
शहर की ज़हरीली
मिट्टी में बस चुके हैं
क्या यह उचित होगा कि
मैं वहाँ आकर
ज़हरीली मिट्टी में
खाद का काम करूँ

मालिक वो कहावत तो
आपने सुनी होगी कि
सुबह का भूला शाम को
घर लौट आये तो
उसे भूला नही कहते

आप आयेंगे तो
किसान भी लौट आयेंगे
उसकी सारी की सारी
खुशियाँ लौट आयेंगी

और यह कहूँगा तो
छोटे मुँह बड़ी बात होगी
क्योंकि यह तो
इन्सानों के लिए कहा जाता है
आप तो देवों के भी देव है
खुशियाँ बाँटने से दुगुनी
व दु:ख बाँटने से
आधा हो जाता है
अत: इन हालात को देखते हुये
आपसे नम्र निवेदन है कि
आप समय-समय पर
आते रहा करो
भारत आपका अपना देश है
इसकी ख़ुशहाली व समृद्धि के
आप भी पूरे हक़दार है।

कब-तक

न बदन में ताज़गी
न चेहरे पर रौनक़
कब तक
कागज के
फूलों को महकाया जाये

न रिश्तों में मज़बूती
न मुलाक़ातों में गुफ़्तगू
कब तक दोस्ती को
दुश्मनी से निभाया जाये

न पाँवों में जूते
न ग़ुलों का सफ़र
न कोई रहबर
कब तक हमसफ़र को
मंजिल में बदला जाये

न शेरों पर दाद
न लतीफ़ों पर हँसी
कब तक महफ़िल को
तन्हाई से चलाया जाये

न दोस्ती का जज़्बा
न दौलत की शौहरत
कब तक हाथों को
हाथों से मिलाया जाये

न घर में चराग़
न रातों में रोशनी
कब तक आफ़ताब से
याराना किया जाये

न दिमाग में अक़्ल
न ज़माने को इल्म
कब तक लोगों को
बेवक़ूफ बनाया जाये

न मौत का ख़ौफ़
न जीने की तमन्ना
कब तक ज़िन्दगी से
समझौता किया जाये

न दिलों में धड़कन
न नब्ज़ में रफ़्तार
कब तक सांसों को
दौलत से चलाया जाये

न हुस्न का जमाल
न अदाओं में नज़ाक़त
कब तक बदन को
नुमाईश किया जाये

न शौहर का साया
न माँ-बाप का आसरा
कब तक निकाह को
अदालत से बचाया जाये

न अवाम की फ़िक्र
न वतन से ख़ुद्दारी
कब तक सियासत को
ख़ुदग़र्ज़ी से चलाया जाये

न पेट में दाना
न कटोरे में भीख
कब तक बच्चों को
सीने से लगाया जाये

न भाई का फ़र्ज़
न पति की ज़िम्मेदारी
कब तक अस्मत को
सड़कों पे बचाया जाये

न चाँद की चाँदनी
न सितारों की झिलमिल
कब तक जुगनुओं से
रातों को रोशन किया जाये

न हीर मिली रांझा को
न लैला मिली मज़नू को
कब तक शमा को
परवानों से बुझाया जाये

न खिलौनों की जिद
न सपनों का संसार
कब तक जूठन को
ढाबों पर धुलवाया जाये।

पवित्रता

हम मज़बूर वैश्यायें हैं
विवशता में तन बेचना
हमारा पेशा ज़रूर है
मगर हम वैश्यायें
किसी भी क़ीमत पर
मन और आत्मा नहीं बेचती
तन अगर गन्दा भी होता है तो
उसे आसानी से धोकर
स्वच्छ किया जा सकता है
मगर मन व आत्मा को
निर्मल व पवित्र करना
बहुत ही मुश्क़िल होता है
इसलिये पवित्रता का सम्बन्ध
मन और आत्मा से है
तन और बदन से नहीं

हमारे पेशे के कुछ उसूल हैं
हमारे दीन और ईमान हैं
हमारे नियम व क़ानून क़ायदे हैं
इनकी पालना करके
इन सीमाओं में रहकर ही
हम वैश्यायें पेशा करती हैं

ख़ुदग़र्ज़ मर्दों की तरह
हम वैश्यायें बेवफ़ा नहीं होती
हमारे परिवार को
यह सब पता होता है कि
हम बेबस और लाचार वैश्यायें
ग्राहक के साथ क्या करती हैं
हम हमारे परिवार के प्रति
ईमानदार व वफ़ादार होती हैं
इसलिये पवित्रता का सम्बन्ध
मन और आत्मा से है
तन और बदन से नहीं

हम पेशेवर वैश्यायें
मामूली सा शुल्क लेकर
काम पिपासु मर्दों की
काम वासना को शान्त करके
मर्दों के तन और मन को
शान्त और निर्मल करती हैं
अगर हम प्रताड़ित वैश्यायें
काम वासना से ग्रस्त
हैवान और शैतान मर्दों की
काम वासना को
शान्त नहीं करें तो
ये ज़ालिम और राक्षस
हमारी बहन बेटियों के साथ
बलात्कार व ज़बरदस्ती करके
इनका सम्पूर्ण सामाजिक जीवन
नर्क से भी बदतर कर देते हैं

और बहन बेटियों को
आत्म हत्या करने के लिये
मज़बूर और बेबस कर देते हैं
इसलिये पवित्रता का सम्बन्ध
मन और आत्मा से है
तन और बदन से नहीं

ज़माने की नज़र में
हम बुरी हो सकती हैं
मगर हमारा पेशा
नेकी व भलाई का होता है
इस प्रकार हम बदनाम, बुरी,
प्रताड़ित, बदचलन, बेशर्म
और गंदी पेशेवर वैश्यायें
समाज की पवित्रता और
बहन बेटियों की सुरक्षा को
कायम व मर्यादित रखती हैं
इसलिये पवित्रता का सम्बन्ध
मन और आत्मा से है
तन और बदन से नहीं।

गमलों में उगी बेटियाँ

गमलों में लगे
पौधों की तरह
हम, ऊर्जावान
बेटियों को पालते हैं

गमलों में लगे पौधों में
जड़ों की सीमायें होती हैं
पौधों के फलने फूलने में
ऊर्वरा मिट्टी की
बाधायें होती है
वैसे ही हम
ऊर्जावान बेटियाँ भी
उचित पालन और
पौषण के अभाव में
तन और मन से
खिल-खिलाकर
पूर्णरूप से
विकसित नहीं हो पाती

ज़मीन में
लगा हुआ शजर
ख़ुली ज़मीन के

उचित पोषण से
विशाल और
हरा-भरा होकर
प्रकृति और संसार को
हवा,छाया,लकड़ी,फल
और प्राणदायनी वायु देकर
तमाम उम्र
ख़ुशहाली देता है
वैसे ही हमारी
प्रतिभावान बेटियाँ भी
उचित पालन और पोषण से
शारीरिक और मानसिक रूप से
पूरी तरह से विकसित होकर
समाज और परिवार को
इतना कुछ दे सकती है कि
सारा का सारा संसार
हमेशा हमेशा के लिये
ख़ुशहाल और आबाद हो जाये।

पिंजरे का पंछी

पिंजरे में बन्द पंछी
जिसके पंख
जकड़ चुके है
उससे क्या हम
यह उम्मीद
कर सकते हैं कि
वह आँधी और तूफ़ान में
अच्छी तरह से उड़ पायेगा

उसी प्रकार से
घर और परिवार की
चार दीवारी में क़ैद
चालाक ज़माने से बेख़बर
मासूम बेटियों से
हम यह कैसे
उम्मीद कर सकते हैं कि
मुसीबत और बुरे वक़्त के समय
परिवार और समाज की
कुछ भी मदद कर पायेंगी

अगर हमने
ऊर्जावान बेटियों को

आज़ाद पंछी की तरह
ख़ुला आसमान देकर
पालन और पोषण
किया होता तो
मासूम और प्रतिभावान
हमारी बेटियों को
दुनियादारी की ख़बर रहती
और मासूम बेटियाँ
ख़ुदग़र्ज़ दुनिया को समझकर
ख़ुद अपना, समाज
और परिवार का
विकास कर पाती।

देश का नियोजन

परिवार

जो पालने खिलाने
और पढ़ाने में समर्थ हैं
वो तो बहुत ज़्यादा
सोच समझकर
सिर्फ़ एक बच्चा
पैदा कर रहे हैं
जो बदहाली और
फ़ाकाकशी में जी रहे हैं
वो सात आठ बच्चे
पैदा कर रहे हैं
क्या यह सही अर्थों में
समाज में परिवार का
उचित नियोजन है

बेटा-बेटी

सिर्फ़ और सिर्फ़
एक नालायक बेटे की
चाहत और मन्नत में
होनहार और संस्कारिक
मासूम बेटियों की
गर्भ में निर्मम
भ्रूण हत्यायें कर रहे हैं
क्या यह सही अर्थों में

बेटा और बेटी का
उचित सामाजिक नियोजन है

रिश्ते

बेटियों के बिना
बेटे की कलाई सूनी है
बेटियों के बिना
बहू की मारामारी से
पढ़े लिखे सम्पन्न
बेटे भी कुँआरे हैं
भाई और बहन का
प्यार अधूरा है
देवर और भाभी के
रिश्ते में क़शिश नहीं है
जीजा और साली में चाहत
गुज़रे ज़माने की कहानी है
बिना बहन के अकेलेपन से
मासूम बचपन की हत्या
ख़ुद बेटों की मुँह ज़ुबानी है
बेटियों की हत्या से
दुनिया आधे रिश्तों से
बेमानी और अंज़ानी है
क्या यह सही अर्थों में
हमारे रिश्तों का
उचित सामाजिक नियोजन है

दौलत

ज़माने में बहुत से
अय्यास दौलतमंद

विलासिता और फिजूलखर्ची में
धन और दौलत
पानी की तरह बहा रहे हैं
और करोड़ों इन्सान
कच्ची बस्तियों
और फुटपाथ पर
बदहाली से नर्क का
जीवन जी रहे हैं

दौलत

मरणासन अमीरों को
ज़िन्दा रखने के लिये
महँगा इलाज,
और बहुत सारे
असहाय गरीब
मामूली इलाज के बिना
दम तोड़ रहे हैं
महँगी शिक्षा के बावजूद भी
दौलतमंद बच्चे
बदचलन हो रहे हैं
होनहार गरीब बच्चे
अभावों में पलकर
समाज का नाम
रोशन कर रहे हैं
साधन सम्पन्न दौलतमंद
बिना भूख के भी खाकर
आर्थिक, शारीरिक और
मानसिक रोगी हो रहे हैं

ग़रीब मेहनत मज़दूरी करके
ख़ून पसीने की कमाई से
दो वक़्त की सूखी रोटी से
गुज़र बसर कर रहे हैं
क्या यह सही अर्थों में
धन और दौलत का
उचित नियोजन है

आर्थिक विकास

किसी की राजशाही शादी में
दस हजार करोड़ का खर्च
और करोड़ों सुशील व सुन्दर
गृह कार्यों में दक्ष
बेटियों की डोलियाँ
अर्थी में बदल रही है
या फिर दहेज की चिता पर
बेमौत ज़िन्दा जल रही हैं
या फिर पीले हाथ होने पर
शगुन की शहनाई के बजाय
आँगन में श्मशान का सन्नाटा है
क्या यह सही अर्थों में
आर्थिक विकास का
समुचित नियोजन है

न्याय

आम आदमी इंसाफ़ के लिये
कई सालों से अदालतों में
दरदर भटक रहे हैं और

साधन सम्पन्न दौलतमंद
इंसाफ़ को खरीदकर
गुनहगार होकर भी
बेख़ौफ़ शान से घूम रहे हैं
क्या यह सही अर्थों में
समान न्याय का
समुचित नियोजन है

सुरक्षा

चोर, लुटेरे, हत्यारे, बलात्कारी
और अन्य अपराधियों को
मिली भगत और रिश्वत से
पुलिस और प्रशासन का
कोई भी खौफ़ नहीं
मगर ज़रूरतमंद
सच्चा आम आदमी
पुलिस को देखकर ही
डर और सहम जाता है
क्या यह सही अर्थों में
सामाजिक सुरक्षा का
समुचित नियोजन है

प्रतिमा

अस्सी प्रतिशत वाला तो
बेरोजगार होकर
दरदर भटक कर
हैरान और परेशान होकर
फाँसी के फन्दे पर लटक कर
या ज़हर खाकर

आत्म हत्या कर रहा है
और बीस प्रतिशत अंकों से
फेल होने वाला अक्षम
सरकारी नौकरी पाकर
आर्थिक ख़ुशहाली से
मौज मस्ती कर रहा है
क्या यह सही अर्थों में
होनहार प्रतिभा का
उचित नियोजन है

धर्म

धर्म के नाम पर
देश के टुकड़े हो गये
धर्म के नाम पर देश में
एक दूसरे के
ख़ून के प्यासे हैं
धर्म के नाम पर देश में
आतंकवाद और ख़ून खराबा है
क्या यह सही अर्थों में
धर्म की सद्भावना का
समुचित नियोजन है

जाति

एक दूसरी जातियों में
रंजिश और नफ़रत है
एक दूसरे पर
वर्चस्व की लड़ाई है
सहयोग और सद्भावना का
नितान्त अभाव है

जातियों के नाम पर
देश और समाज में
मतलब की राजनीति है
क्या यह सही अर्थों में
जातियों का देश में
सामाजिक नियोजन है

देशभक्ति

अपने ना कुछ
मामूली लाभ के लिये
देश की सम्पत्ति का
करोड़ों का नुकसान है
देश से गद्दारी और
बेवफ़ाई की ख़बरें आम है
रिश्वत के बिना
कोई भी काम
मुश्क़िल और नामुमक़िन है
हर तरफ भ्रष्टाचार का
सारे देश में बोलबाला है
शहीदों के लिये
तौहीन और ज़लालत है
शहीदों के परिवारों की
तंगहाली और बदहाली में
खस्ताहाल गुज़र बसर है
भाई-भतीजावाद
और परिवारवाद से
देश की सत्ता का
तानाशाही संचालन है
क्या यह सही अर्थों में
देश भक्ति का नियोजन है।

कायर इन्सान

हम गाय और भैंस,
बकरी और सूअर,
खरगोश और मछली,
तीतर और बटेर,
मुर्गा और कबूतर,
हिरण, इत्यादि
सीधे साधे
शरीफ जानवर हैं
जिनका ही माँस
कायर इन्सान खाता है

हमारी निर्मम हत्या करके
हमारा माँस खा कर
कायर और डरपोक इन्सान
कौनसी बहादुरी का
बहुत बड़ा काम करता है

अगर इन्सान
इतना ही शूरवीर है
अगर इन्सान में
इतनी हिम्मत है तो
शेर और मगरमच्छ का

बहादुरी से शिकार करके
इनका माँस खाकर
हम सीधे साधे
जानवरों को दिखाये
तब जाकर ही
हम इन्सान को
शूरवीर और योद्धा मानेंगे

अन्यथा इन्सान
हम सीधे साधे
जानवरों की नज़रों में
कायर और डरपोक से भी
गया गुज़रा दोगला प्राणी है

अगर कोई बिरला इन्सान
शेर का शिकार करके
शेर को मारता है तो
छल या धोखे से मारता है
शेर का सामना करने की तो
कायर और डरपोक
इन्सान की औक़ात नहीं है

कायर और डरपोक इन्सान
हम जैसे सीधे साधे
शरीफ जानवरों को
आसानी से पकड़कर ही
बेरहमी से हमारा क़त्ल कर
माँस खा सकता है

जब खाने के लिये
इतने शाकाहारी
स्वादिष्ट पकवान है तो
फिर माँस क्यों खाये
वैसे भी क़ुदरत के अनुसार
मनुष्य हिंसक जीव नहीं है

चिकित्सा शास्त्र और
भोजन शास्त्र के अनुसार
किसी भी प्रकार का माँस
मनुष्य के लिये
उचित भोजन नहीं है

इसलिये अधिकतर खिलाड़ी
और अधिकतर स्वस्थ इन्सान
शाकाहारी दिनचर्या अपनाकर
दीर्घायु और निरोगी
जीवन को प्राप्त करते हैं।

बुराईयों से ख़ुशहाली

हम कामचोर और मक्कार,
शातिर अपराधी और झूठे,
बेईमान और भ्रष्टचारी,
देशद्रोही और हत्यारे,
लुटेरे, बेवफ़ा, बलात्कारी,
ख़ुदग़र्ज़ और मतलब परस्त,
नास्तिक और दहेज लोभी,
रिश्वतखोर और जातिवादी,
आतंकवादी और चापलूस,
हैवान, शैतान और कायर,
डरपोक और चरित्रहीन,
चोर, शराबी, रईस कर्ज़दार
इत्यादि बुरे इन्सान
इस संसार में
जब तक ज़िन्दा हैं
तब तक ही
अच्छे बुरे में भेद हैं

जब तक ही सच्चे,
मेहनती, वफ़ादार,
ईमानदार, इन्सानियत
और भलाई की ज़माने में

क़द्र और अहमियत है
अगर बुरे इन्सान ही
संसार में नहीं रहेंगे तो
अच्छे इन्सानों की तुलना
कैसे और किससे करोगे

जब इस संसार में
बुरे कर्म ही नहीं होंगे तो
फिर पुण्य और अच्छे
कर्म कौन करेगा
जब कलयुग ही
नहीं रहेगा तो फिर
सतयुग की कल्पना
कैसे और कौन करेगा
जब हर तरफ
राम राज्य होगा तो
रावण व जंगल राज का
क्या हाल होगा
क्या हमारा जीना
मुश्किल ही नहीं
नामुमक़िन नहीं हो जायेगा

क्योंकि आज के इन्सान में
किसी न किसी रूप में
रावण के कई रूप ज़िन्दा है
संसार के चप्पे-चप्पे पर
चारों तरफ लंकायें आबाद हैं
संसार में हर तरफ शान से

रावण विचरण कर रहे हैं
बेचारे राम जैसे
सीधे साधे शरीफ इन्सान
बदनामी और बदहाली में
मुँह छुपाते फिर रहे हैं

बुराईयाँ अब हमारे तन मन,
दिल और दिमाग़ में
इतनी गहरी पैठ बनाकर
हमारी रग-रग में
समा चुकी है कि
अगर हम बुरे इन्सान
इस संसार में नहीं होंगे तो
धार्मिक बाबाओं के आश्रमों में
पाँच सितारा होटलों जैसी
राजशाही रईसी और
साधन सम्पन्न विलासता की
सुख सुविधाओं का क्या होगा

क्योंकि हम उपरोक्त
बुरे इन्सान ही तो
बाबाओं को चन्दा और भेंट
उपहार में देते हैं
मेहनत और ईमानदारी से तो
दो वक़्त की सूखी रोटी से
सामान्य परिवार का ही
गुज़ारा हो सकता है

अगर उपरोक्त बुरे इन्सान
ख़त्म हो जायेंगे तो
अदालतों और थानों,
आयकर विभाग,
भ्रष्टाचार रोकथाम विभाग,
बिक्री कर विभाग,
आबकारी विभाग,
अन्य ऐसे सरकारी विभाग
जो उपरोक्त बुराइयों को
ख़त्म करने के लिये
सरकार द्वारा चलाये जाते हैं
इन सब कार्यालयों की
ज़रूरत ही नहीं रहेगी तो
इन सब विभागों के
करोड़ों सरकारी कर्मचारी
बेरोजगार हो जायेंगे
और इनके परिवारों के
भूखे मरने की नौबत
नहीं आ जायेगी

अगर हम उपरोक्त
सारे बुरे इन्सान
समाज में नहीं रहेगे तो
देश के लाखों वकीलों का
कितना बुरा हाल होगा
जो ख़रीदे गये झूठे गवाह
और सबूत पेश कर
हमें बरी करने की

अदालत में पैरवी करते हैं
और अपना रोजगार चलाते हैं
क्योंकि हम उपरोक्त
सभी बुरे इन्सान ही तो
वकीलों को भारी फीस देते हैं

सरकार के सभी विभागों पर
अगर हम गौर करें तो
हमें यह मालूम होता है कि
अधिकतर सरकारी विभाग
उपरोक्त बुराइयों को
ख़त्म करने के लिये ही
सरकार द्वारा चलाये जाते हैं
इससे यह साबित होता है कि
सरकारें ही भ्रष्ट होती हैं
क्योंकि कार्यालय में बुराइयाँ
हमेशा ऊपर से
नीचे की ओर आती हैं
सरकारी विभाग में
सामान्य कर्मचारी
इतना समर्थ नहीं होता है कि
उपरोक्त सभी बुराइयों को
मन्त्री और अफ़सरों के बिना
ठीक तरह से अन्जाम दे सके
इसलिये यह परम सत्य है कि
जैसा राजा होगा वैसी प्रजा होगी।

किराये का मकान

मैं किराये का मकान हूँ
मेरे मालिक ने मुझे
किराये की आय प्राप्त करने के
लालच भरे दृष्टिकोण से
काम चलाऊ तरीके से बनाया है
इसलिए मैं उतना
मज़बूत और सुन्दर नहीं हूँ
जितने ख़ुद के मकान होते हैं

मुझमें रहने वाले इन्सान
मेरे तन और मन के साथ
अच्छा व्यवहार नहीं करते
मुझे घृणा और नफ़रत की
बुरी नज़र से देखते हैं
मेरी सुन्दरता और
मज़बूती की तुलना
अपने ख़ुद के मकान से करके
मेरे साथ दोगला व्यवहार करते हैं

जबकि मैं
दिल से चाहता हूँ कि
किरायेदार उसी अहसास

और जज़्बात से
मेरा उपयोग करें
जैसे अपने ख़ुद के मकान का
अपना समझकर उपयोग करते हैं
मेरी भी उसी तरह
उचित देखभाल करें
जितनी अच्छी ख़ुद के
मकान की करते हैं
मुझे भी उतना ही
प्यार और अपनापन दें
जितना अच्छा ख़ुद के
मकान को देते हैं
मुझे भी उतने ही
मान और सम्मान की
अच्छी दृष्टि से देखें
जितना अच्छा ख़ुद के
मकान को देखते हैं

मैं तो
किरायेदार और मालिक में
किसी भी प्रकार का
कोई फ़र्क नहीं करता
मैं तो हर इन्सान को
बिना किसी भेदभाव के
उतनी सुख सुविधायें,
सुरक्षा और आराम
देना चाहता हूँ
जितनी मेरे पास अधिकतम है

हर नये किरायेदार
मेरे साथ अपनी सुविधा से
मनमर्जी से दुरूपयोग करते हैं
और मेरे साथ
बुरा बर्ताव करते हैं
जिससे मेरा तन और मन
हीन भावना से ग्रसित होकर
मानसिक और शारीरिक रूप से
बदहाल और जर्जर हो जाता है

क्योंकि मैं बदनसीब
किराये का मकान हूँ
क्योंकि मैं बदनसीब
किराये का मकान हूँ।